IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

21वी सदी मे भारतीय विदशनीति में अफगानिस्तान का भू–रणनीतिक और भू–आर्थिक महत्व

Name- Saleem Ahamad **Research Guide-** Prof. Ashima Ghosh

Research Institution- Ewing Christian College, Prayagraj

सारांस. अन्तराष्ट्रीय राजनीति में प्रत्येक देश अपने राष्ट्रीय हितों के माध्यम से अन्य देशों के साथ अपने सम्बंधों को बढ़ाता है; तथा प्रत्येक देश का राष्ट्रीय हित उसके भौगोलिक स्थितिएजलवायु;आकार जनसंख्या आदि तत्वों से निर्धाηत होता है। भारत अपनी भौगोलिक स्थिति; आकार; जनसंख्या आदि दृष्टिकोण से एशिया का प्रमुख शक्ति है। अफ्गानिस्तान रणनीतिक रुप से भारतीय हितों के लिए महत्वपूर्ण है; तथा उसका सामηक और आर्थिक महत्व उसे इस क्षेत्र मे एक महत्वपूर्ण देश के रुप में स्थापित करता है।

''अफ्गानिस्तान अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण इस क्षेत्र में भू–आर्थिक और भू–रणनीतिक प्रभुत्व के लिए संघर्ष का चौराहा रहा है।''[1] अफगानिस्तान किसी भी महाशक्ति के लिए एशिया में अपनी रणनीतिक स्थिति को प्रभावी रखने के लिए एक आवश्यकता बना हुआ है क्योंकि अफगानिस्तान की भौगोलिक स्थिति सेट्रल एशिया; पश्चिम एशिया तथा दंक्षिण एशिया को आपस में जोड़ती है।

अफगानिस्तान की सीमा पाकिस्तान जो अफगानिस्तान को दक्षिण एशिया से जोड़ता है; इरान जो पश्चिम एशिया की राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान रखता है; तीन सेन्ट्रल एशियाइ देश तुर्कमेनिस्तान उजबेकिस्तान तथा ताजिकिस्तान से लगता है; इसके साथ चीन के साथ भी छोटी सीमा लगती है। अफ्गानिस्तान भारत के साथ भी एक छोटी सी सीमा साझा करता है लेकिन उस पर पाकिस्तान का कब्जा है। अफगानिस्तान को सेट्रल एशिया का क्रास रोड़ कहा जाता है इसके साथ ही यह सदियों से महाशक्तियो के आक्रमण का साक्षी रहा है लेकिन कोई भी महाशक्ति लम्बे समय तक अफगानिस्तान को अपने नियंत्रण में नही रख सका। ''अन्ततः उनके लिए अफगानिस्तान उनका कब्रगाह साबित हुआ जिसके कारण अफगानिस्तान को ''साम्राज्यों का कब्रिस्तान'' भी कहा जाता है''[2]। अफगानिस्तान की स्थिति; सेट्रल एशिया; पश्चिम एशिया तथा दक्षिण एशिया को आपस मे जोड़ती है; यह सदियों से भारतीय उपमहाद्वीप पर आक्रमण तथा व्यापार के लिए सुगम मार्ग प्रदान करता रहा है। बहुत से शासक जैसे डेηयस;सिकन्दर महान;मुस्लिम शासक; ब्रिटिस साम्राज्य;सोवियत संघ तथा अमेηका आदि ने अफगानिस्तान मे अपने पदचिन्ह छोड़े है।

जैसा कि हम जानते है कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बधों मे राष्ट्रों के हित ही उन्हे एक दूसरे के पास लाते है। भारत का अफगानिस्तान के साथ प्राचीन काल से ही सामाजिक; आर्थिक; राजनीतिक; सास्कृतिक तथा सभ्यतागत जुड़ाव रहा है। अफगानिस्तान कभी भारत के हिन्दु
धर्म तथा बौद्ध धर्म का गढ़ हुआ करता था लेकिन इस्लाम के आगमन तथा इस क्षेत्र मे इस्लाम के प्रभाव बढ़ने से इन दोनो धर्मो का प्रभाव बहुत सीमित रह गया है। भारत मे मुस्लिम शासन के समय बहुत से शासक अफगानिस्तान से आए थे जैसे गौरी; बाबर; नादिर शाह; अहमद शाह अब्दाली इत्यादि। अफगानिस्तान लम्बे समय तक भारतीय मुस्लिम शासको के प्रत्यक्ष नियंत्रण मे था जिससे दोनो देशो के मध्य व्यापार और संस्कृति का आदान प्रदान होता रहा। दोनो देशों के मध्य स्पष्ट सीमा का विचार सबसे पहले ब्रिट्रिश शासको ने लाया; क्योंकि उस समय भारत ब्रिटेन की कालोनी हुआ करता था। रुसी साम्राज्य भी इस क्षेत्र मे अपने प्रभाव को बढ़ाने का प्रयास कर रहा था। इससे ब्रिटिस सरकार ने इस क्षेत्र मे रुसी प्रभाव को रोकने के लिए अफगानिस्तान को एक बफर क्षेत्र के रुप मे उपयोग करने का निर्णय लिया। इसके पπणाम स्वरुप ब्रिटिश भारत तथा अफगानिस्तान के शासकों के मध्य तीन युद्ध भी लड़े गये। अन्ततः प्रथम विश्व युद्ध के बाद अग्रेजो ने अफगानिस्तान को आजाद कर दिया तथा हिन्दु कुश पर्वत को दोनो देशों के मध्य सीमा मान लिया गया। आजादी के बाद भारत ने अफगानिस्तान के साथ अपने सम्बधों को औपचाπक बनाने के लिए 1950 को मित्रता सन्धि पर हस्ताक्षर किया।

आधुनिक समय मे किसी भी देश को विश्व राजनीति मे अपने प्रभाव को बढाने तथा स्थिर रखने के लिए अर्थव्यवस्था का मजबूत होना आवश्यक है जो कि उर्जा की निरन्तरता पर निर्भर करता है। आज भारत विश्व मे तेजी बढती अर्थव्यवस्था है और इसे अपने अर्थव्यवस्था की लगाातार वृद्धि के लिए उर्जा की बिना अवरोध पहुच आवश्यक है जिसके लिए भारत को सेन्ट्रल एशियाइ देशो तक बिना अवरोध के पहुच आवश्यक है। अफगानिस्तान सेन्ट्रल एशियाइ देशो मे भारत के पहुच के लिए प्रवेश द्वार का कार्य करता है।

कीवर्ड. भारत;अफगानिस्तान;तालिबान;ग्रेट गेम;उर्जा सुरंक्षा

परिचय– 21वी शताब्दी को एशिया की सदीं माना जा रहा है तथा भारत जो कि दक्षिण
एशिया का प्रमुख देश है; तेजी से वैश्विक शक्ति के रुप मे उभर रहा है। एशिया मे भारत और चीन दो मुख्य शक्ति है जिनके मध्य अपने प्रभुत्व शक्ति को बढ़ाने को लेकर संघर्ष चल रहा है। ''अफगानिस्तान सेट्रल एशिया; पश्चिम एशिया और दक्षिण एशिया के चौराहे पर स्थित है तथा इसकी यह भौगोलिक स्थिति इस क्षेत्र मे प्रभाव बढ़ाने के लिए इसके महत्व को रेखांकित करता हैं''[3]। अतः इस क्षेत्र मे प्रभाव बढानें के लिए अफगानिस्तान पर नियंत्रण आवश्यक हो जाता है। भारत का अफगानिस्तान के साथ सम्बंध प्राचीन समय से ही रहा है। भारतीय ग्रंथ महाभारत मे जिस गान्धार जनपद का उल्लेख है वर्तमान में वह क्षेत्र अफगानिस्तान मे पड़ता है। अफगानिस्तान के साथ भारत का सभ्यतागत जुड़ाव रहा है अफगानिस्तान मे भारतीय संस्कृति का खासा प्रभाव रहा है। इस्लाम के आगमन से पहले अफगानिस्तान हिन्दु और बौ़द्ध धर्म का गढ़ हुआ करता था अफगानिस्तान के बामियान प्रान्त मे मौजूद बुद्ध की विशाल मूर्ति इसका उदाहरण है जिसको तालिबान ने अपने पहले शासन के दौरान ध्वंस्त कर दिया था। अफगानिस्तान से होते हुए ही बौद्ध धर्म सेन्ट्रल एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया मे फैला। लेकिन इस्लाम के आगमन के बाद इन धर्मो का प्रभाव अफगानिस्तान मे बहुत कम बचा है। प्राचीन तथा मध्य काल मे कइ भारतीय साम्राज्यों का विस्तार अफगानिस्तान तक था जैसे मौर्य साम्राज्य गुप्त साम्राज्य और मुगल साम्राज्य।

प्राचीन काल मे अफगानिस्तान प्रमुख व्यापाηक मार्ग हुआ करता था; अफगानिस्तान प्राचीन विख्यात व्यापाηक मार्ग सिल्क रोड के केन्द्र मे स्थित है। अफगानिस्तान से होते हुए भारतीय वस्तुए पश्चिम एशिया तथा वहा से यूरोप पहुचती थी। मध्य काल मे मुगल साम्राज्य के स्थापित कर्ता बाबर अफगानिस्तान से ही थे; और मुगल शासन के दौरान अफगानिस्तान उनके नियंत्रण मे था। 15वी शताब्दी से ही युरोपीय देश व्यापार के लिए भारत आने लगे अंग्रेज इस व्यापाηक प्रतिद्वंदिता मे आगे निकल गए तथा अपने समकालीन सभी युरोपीय शक्तियो के साथ–साथ भारतीय राजाओं को भी हरा कर भारत के प्रमुख शक्ति बन गए। ब्रिटिश शासको ने भारत को रुसी प्रभाव से बचाने के लिए अफगानिस्तान का बफर स्टेट के रुप मे प्रयोग किया। यह सारा प्रकरण ग्रेट गेम नाम से जाना जाता है।

अविभाजित भारत का अफगानिस्तान तक प्रत्यक्ष पहुच था लेकिन विभाजन के बाद भी अफगानिस्तान के साथ भारत कि एक छोटी सी सीमा लगती है लेकिन उस पर पाकिस्तान का कब्जा है। अतः वर्तमान भारत का अफगानिस्तान तक सीधा पहुच नही है। ''आजादी के बाद भारत अफगानिस्तान के साथ अपने सम्बंधो को औपचाηक स्थायी और गहरा करने के लिए तथा दोनो देशों के मध्य सम्बंधो को आपसी लाभ तथा सहयोग के आधार पर बढ़ाने के लिए भारत और अफगानिस्तान 4 जनवरी 1950 को मित्रता संधि पर हस्ताक्षर करते है''[4]। इस सन्धि का लक्ष्य दोनो देशो के मध्य परम्परागत सम्बंधो को आपसी लाभ तथा सहयोग के आधार पर विभिन्न क्षेत्रो मे यथा राजनीतिक सामाजिक आर्थिक वैज्ञानिक आदि क्षेत्रो मे दोनो देशो के सम्बंधों को गहरा करना था। आजादी के बाद से दोनो देशो के सम्बंध सामान्य रहे है। अफगानिस्तान मे भारतीय प्रभाव के बीच मे सबये बड़ी बाधा पाकिस्तान है। अफगानिस्तान मे साम्यवादी शासन के बाद भारत पहला गैर साम्यवादी देश था जिसने अफगान साम्यवादी सरकार को मान्यता दिया तथा उसके साथ राजनयिक सम्बध कायम किया। अफगानिस्तान एक धार्मिक अनुदारवादी समाज है तथा साम्यवाद समाजवादी धर्म विरोधी विचारधारा है तथा यह आर्थिक समानता तथा सभी सम्पति को राज्य के अधीन करने की बात करता है जिससे लोगों में आर्थिक समानता लाई जा सके। अफगानिस्तान के धार्मिक नेता तथा क्षेत्रिय लार्ड को अफगान समाजवादी शासन के अंर्तगत अपनी स्थिति और रुतवा खतरे मे लगा और वे साम्यवादी सरकार का विरोध करने लगें। भारत द्वारा अफगान साम्यवादी सरकार को मान्यता देने तथा उसके साथ राजनयिक सम्बंध कायम करने तथा उसे समर्थन देने के कारण अफगान मुजाहिद्दीन भारत को संशय की दृष्टि से देखने लगे। अफगान मुजाहिद्दीन को पाकिस्तान;अमेηका जैसे देशों का समर्थन मिला था; क्योंकि यह दौर अमेηका और सावियत संघ के मध्य शीत युद्ध का दौर था। पाकिस्तान अफगानिस्तान से भारत के प्रभाव को कम करने का हर सम्भव प्रयास किया। आखिरकार सोवियत संघ को अफगानिस्तान से निकलना पड़ा तथा उसके के कुछ समय सोवियत संघ का विखंण्डन हो गया। सोवियत संघ के विखण्डन के बाद अफगान साम्यवादी सरकार को बाहरी समर्थन तथा मदद मिलना बंद हो गया। बाहरी मदद और समर्थन ना मिलने कारण 1991 में अफगान साम्यवादी सरकार का अन्त हो गया; तथा अफगानिस्तान मे सत्ता पर कब्जा को लेकर विभिन्न गुटो मे संघर्ष शुरु हो गया तथा अफगानिस्तान मे गृह युद्ध शुरु हो गया।

भारत ने गृहयुद्ध के समय मे भी अफगानिस्तान को सहायता जारी रखा। अन्ततः 1996 मे पाकिस्तान समर्थित तालिबान नामक संगठन काबुल की सत्ता पर कब्जा करने मे सफल रहा। चूकिं तालिबान पाकिस्तान समर्थित संगठन था तथा पाकिस्तान उसका प्रयोग अफगानिस्तान मे भारत की स्थिति को कमजोर करने के लिए करता है। अतः भारत तालिबान शासित अफगानिस्तान के साथ सारे सम्बध स्थगित कर देता है तथा काबुल स्थित अपना दूतावास भी बन्द कर देता है। भारत अफगानिस्तान मे अपनी स्थिति को बनाए रखने के लिए तालिबान विरोधी संगठन जो नार्दन एलाएन्स के नाम से जानी जाती है को समर्थन देता है। अफगानिस्तान और भारत के सम्बधों मे नजदीकिया 9/11

की घटना के बाद आती है। 9/11 की घटना भारत को अफगानिस्तान मे अपने प्रभाव को बढ़ाने का पुनः अवसर देती है। 9/11 के आतंकवादी हमले के बाद अमेरिका अपने नाटों सहयोगियों के साथ अफगानिसतान में तालिबान के खिलाफ हमला करता है जिसके कारण तालिबान को अफगानिस्तन की सत्ता से जाना पड़ता है। ''अमेरिका अफगानिस्तान को एक लोकतांत्रिक मूल्यों वाला देश बनाना चाहता था इस प्रक्रिया मे उसने हामिद करजइ के नेतृत्व मे एक संक्रमणकालीन प्रशासन का गठन करता है जो आगे लोकतात्रिक प्रक्रियाओं से निर्वाचित सरकार को सत्ता हस्तांतरण करेगी''[5]। भारत इस स्थापित प्रशासन के साथ अपने सम्बधों को सामान्य करता है; तथा काबुल मे बन्द पड़े अपने दूतावास पुनः खोलता है।

भारत ने दशको से हिंसा से पीड़ित अफगानिस्तान के पुर्ननिर्माण मे सहायता करने का आश्वासन दिया। भारत अफगानिस्तान को भारतीय सभ्यता का हिस्सा बताता है तथा उसके रणनीतिक स्थिति को देखते हुए उसके साथ सम्बधों को विस्तार देने का आश्वासन देता है। भारत अफगानिस्तान मे अमेरिकी सुरंक्षा के तले बहुत सी विकास परियोजनाओं मे निवेश किया। भारत ने अफगानिस्तान को 2005 मे शार्क की सदस्यता पेश किया तथा अफगानिस्तान 2007 मे शार्क का पूर्ण सदस्य बन गया। दोनो देशो ने अपने सम्बधों को और अधिक विस्तार देने लिए 2011 मे रणनीतिक भागीदारी समझौते पर हस्ताक्षर करते है। भारत ने अफगानिस्तान के हर क्षेत्र की विकास परियोजनाओं में निवेश किया है। भारत ने अफगान फोर्सेस को मजबूत बनाने के लिए हर साल कुछ अफगान आर्मीज को प्रशिक्षण भी मुहैया कराता था। भारत ने अफगानिस्तान मे लगभग 3 बिलियन अमेरिकी डालर का निवेश किया हुआ है।

इन सारे प्रयासो के बाद भी तालिबान को लेकर भारत की चिन्ता बनी रही। अमेरिकी आक्रमण से तालिबान कुछ समय के लिए निष्क्रिय तो हो गया लेकिन पूर्णतः समाप्त नही हुआ। 2003 मे अमेरिका द्वारा इराक पर आक्रमण के कारण अफगानिस्तान पर उसका ध्यान कम हो गया तथा तालिबान को पुनः उभरने का अवसर मिल गया। तालिबान धीरे धीरे अपने प्रभाव को बढ़ाना जारी रखा। इस बीच बहुत सी भारतीय परियोजनाओं को आतंकवादियो द्वारा निशाना भी बनाया जाता रहा। दो दशक तक बिना किसी स्थायी परिणाम के अफगानिस्तान मे लड़ने के कारण अमेरिका को अब यह युद्ध बोझिल लगने लगा। अमेरिका ने अफगान समस्या का एक स्थायी हल निकालने के लिए तालिबान से बातचीत शुरु कर दिया। अमेरिका के अफगानिस्तान से बाहर निकलने के क्रम में भारत की चिन्ता और बढ़ गइ; क्योंकि भारत अमेरिका सुरंक्षा के तले ही अफगानिसतान मे अपने विकास परियोजनाओं को जारी किये हुए था। फरवरी 2020 मे हुए समझौते के तहत अमेरिका अफगानिस्तान से निकलने पर सहमत हो जाता है। अमेरिका के अफगानिस्तान से निकलने की प्रक्रिया मे 15 अगस्त 2021 को तालिबान पुनः अफगानिस्तान की सत्ता पर कब्जा कर लेता है। भू राजनीतिक विश्लेषक का मानना है कि अफगानिस्तान जहा से चला था वही वापस आ गया। भारत के लिए भी समस्या आ गयी। भारत इसके पहले तालिबान से दूरी बनाए हुए था; भारत के सामने एक बार फिर 1996 के समय की समस्या उत्पन्न हो गयी है। अब देखना होगा कि भारत बदलते वैश्विक परिदृश्य में अफगानिस्तान को लेके क्या नीति अपनाता है।

भारत के लिए अफगानिस्तान का भू–राजनीतिक तथा भू–आर्थिक महत्व

– अफगानिस्तान भूमि से घिरा देश है जिसके अधिकतर भाग पहाड़ो से घिरे हुए है। अफगानिस्तान सांस्कृतिक और रणनीतिक रुप से तो मध्य एशिया का भाग है लेकिन अपनी स्थापना से ही अफगानिस्तान भारतीय उपमहाद्वीप का प्रवेश द्वार होने की भूमिका में है।

''अफगानिस्तान सेन्ट्रल एशिया पश्चिम एशिया तथा दक्षिण एशिया का मिलन बिन्दू है अतः इन क्षेत्रो के व्यापाηक मार्गो को आपस मे जोड़ने मे अफगानिस्तान की महत्वपूर्ण भूमिका है।''[6] अतः अगर इस मार्ग पर नियंत्रण करना है तो अफगानिस्तान पर नियंत्रण अपηहार्य हो जाता है। अफगानिस्तान की मूख्य व्यापाηक मार्ग पर स्थिति तथा इस क्षेत्र मे शक्ति प्रसार के लिए उसके रणनीतिक महत्व के कारण ही ; अफगानिस्तान सदियो से महाशक्तियो के लिए एक भू–राजनीतिक आवश्यकता बना हुआ है। अपने इसी सामηक भौगोलिक स्थिति के कारण अफगानिस्तान विश्व राजनीति का केन्द्र बिन्दू रहा है। 19वी सदी मे अफगानिस्तान ब्रिटिश भारतीय साम्रज्य और रसियन साम्राज्य के बीच ग्रेट गेम का हिस्सा रहा है; 20वी सदी मे द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शीत युद्ध का केन्द्र रहा तथा 21वी सदी के शुरुवात मे 'आतंकवाद के विरुद्ध वैश्विक युद्ध' का केन्द्र रहा। अफगानिस्तान की भू–राजनीतिक स्थिति ने क्षेत्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय अभिनेताओ को इस क्षेत्र मे शक्ति संघर्ष के लिए आकर्षित करता रहा है; द्वितीया विश्व युद्ध के बाद सोवियत संघ ने अफगानिस्तान मे हस्तक्षेप किया तथा 10 वर्षो के अन्तहीन संघर्ष के बाद उसे अन्ततः अफगानिस्तान से बाहर निकलना पड़ा। अफगान युद्ध का आर्थिक भार सोवियत संघ के विघटन का कारण बना। अमेηका ने भी सोवियत संघ से सीख ना लेते हुए 21वी सदी के शुरुवात मे 9/11 की घटना के बाद आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक युद्ध के कम मे अफगानिस्तान के अन्तहीन युद्ध के दलदल मे कूद पड़ा।

आखिरकार 20 वर्षो तक अन्तहीन संघर्ष करने के बाद तथा 3 ट्रिलियन डालर से अधिक और हजारो सैनिको का जान गवाने के बाद अमेηका को अफगानिस्तान को वही छोड़कर; जहां से वह चला था; अगस्त 2021 को छोड़ कर भागना पड़ा। यह देखना रुचिकर होगा कि जिस देश को अपने समय की दोनो महाशक्तिया लम्बे समय तक नियंत्रित नही कर सकी उस कभी न खतम होने वाले खेल मे चीन एक नया खिलाड़ी बन कर उभर रहा है।

भारत का अफगानिस्तान के साथ सम्बध सहानूभूति सुरंक्षा और आपसी विकास की जरुरतो के कारण समय के साथ गहरा हुआ है। भारत अफगानिस्तान मे आधारभूत मानवीय जरुरतो वाले पηयोजनाओं मे निवेश किया है जिससे अफगान लोगो मे भारत को लेके काफी सकारात्मक झुकाव पाया जाता है। अफगान राष्ट्रपति ने भारत अफगान सम्बधों को 'खुला किताब' कहकर सम्बोधित किया था। इसी प्रकार भारतीय प्रधानमत्री श्री मोदी ने 'भारत अफगान सम्बधों को इतिहास से भी प्राचीन बताया।' अफ–पाक क्षेत्र मे राजनीतिक उथल पुथल तथा शक्ति संघर्ष की लपटे इस सारे क्षेत्र को प्रभावित करती है। भारत के विकास के लिए इस क्षेत्र मे शांन्ति के महत्व को रेखांकित करते हुए भारतीय प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह ने कहा कि ''एक सहकारी उपमहाद्वीप के दृष्टिकोण से इस क्षेत्र की शान्ति तथा स्थिηता इस महाद्वीप के लोगों की समृद्धि के लिए एक स्थायी अफगानिस्तान भारत के तत्कालिक विदेशनीति का लक्ष्य है; जिससे यह क्षेत्र शान्तिंपूर्ण रहे तथा पड़ोसियों से अच्छे सम्बध विकसित हो सके तथा अन्तर्राष्ट्रिय समुदाय के साथ कार्य करते हुए वैश्विक अर्थव्यवस्था को तेजी से पतरी पर लाया जा सके।'' एक स्थायी अफगानिस्तान भारत के साथ इस पूरे क्षेत्र की आवश्यकता है। अफगानिस्तान के महत्व को देखते हुए भारत ने अफगानिस्तान की सत्ता से तालीबान के जाने के बाद से अफगानिस्तान के लिए सक्रिय विदेशनीति अपनायी है तथा समय के साथ दोनो

देशो के सम्बधों मे नजदीकिया बढ़ती गई है। भारत के लिए अफगानिस्तान के महत्व को निम्न बिन्दुओं से समझ सकते है।

1- भारत की आन्तरिक शान्तिं तथा सुरंक्षा— दक्षिण एशिया मे भारत भौगोलिक रुप से सबसे बड़ा तथा सबसे महत्वपूर्ण देश है। वर्तमान भारत विश्व की सबसे बड़ी आबादी वाला देश है और यह आबादी उतनी ही विविधतापुर्ण भी है। आद्यौगिक और आर्थिक दृष्टि से भारतीय क्षेत्रो मे बहुत विषमता है कुछ क्षेत्र उच्च आद्यौगिकृत तथा आर्थिक रुप से सशक्त है तथा कुछ क्षेत्र निम्न आद्यौगिकृत तथा आर्थिक दृष्टि से पिछड़े है। भारत के लोगो मे आर्थिक असमानता की खाई बहुत चौड़ी है। भौगोलिक दृष्टि से विशाल क्षेत्र धार्मिक तथा जातिय दृष्टि से बटा हुआ समाज तथा उच्च आर्थिक असमानता से पीड़ित इस क्षेत्र को संचालित करना भी उतना ही कठिन कार्य है। भारत की आजादी के साथ इसके विभिन्न क्षेत्रों मे उथल पुथल जारी रहा है जो भारत की सुरंक्षा के लिए गम्भीर चुनौतियां उत्पन्न करते रहे है। भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र मध्य भारत का कुछ क्षेत्र तथा जम्मू और कश्मीर मे यह उथल पुथल भारतीय सुरंक्षा के लिए गम्भीर चुनौती रहा है।

भारत का विशेषकर जम्मू कश्मीर प्रान्त पाकिस्तान प्रायोजित सीमापार आतंकवाद से बुरी तरह प्रभावित है; अफगानिस्तान मे तालिबान की वापसी तथा सत्ता संघर्ष वहा राजनीतिक अस्थायित्व को जन्म देगा जिससे वहा आतंकवादियों को छिपने का स्थान मिल सकता है। अतः अफगानिस्तान आतंकवादियों के लिए सुरंक्षित शरण स्थली बन सकती है। अगर प्रायोजित आतंकवाद को अफगानिस्तान में छुपने का पनाह मिलता है तो यह भारत कि सुरंक्षा के लिए खतरा होगा; क्योंकि पाकिस्तान जब चाहेगा आतंकवादियों को अफगानिस्तान से निकालकर जम्मू कश्मीर मे भेज देगा और फिर अपना काम करके वह अफगानिस्तान मे वापस आ जायेंगे।

2- भारत की उर्जा समस्या— परम्परागत रुप से ही अफगानिस्तान भारत का सेन्ट्रल एशियाइ देशो मे पहुच के लिए प्रवेश द्वार रहा है। जैसे कि स्वर्गीय जैन दीक्षित ने कहा था कि ''यूरेशियन क्षेत्र उर्जा और आर्थिक सहयोग के विशाल अवसरों को साकार करने के लिए अफगानिस्तान के संकट का शीघ्र समाधान आवश्यक है।''[7] यह सर्वविदित है कि सेन्ट्रल एशियाइ देश प्राकुतिक उर्जा संसाधनो से पηपूर्ण है तथा भविष्य मे भारत को अपनी आद्यौगिक जरुरतो को पूरा करने के लिए उर्जा के निरन्तर पहुच की आवश्यकता होगी। अतः सेन्ट्रल एशियाइ देश भारत को अपनी उर्जा जरुरतों के लिए

एक सुलभ विकल्प हो सकते है। जैसा की हम जानते है कि सेन्ट्रल एशियाइ देशों मे पहुच के लिए अफगानिस्तान एक विकल्प है। भारत और अुफगानिस्तान के मध्य सबसे बड़ी बाधा सूलभ पहुच का है; पाकिस्तान इसमे सबसे बड़ी बाधा है इस बाधा को दूर करने के लिए भारत ने इरान के साथ हाथ मिलाया है। भारत इरान के चाबाहार पोर्ट को विकसित कर रहा है तथा चाबाहार को सड़क मार्ग से अफगानिस्तान से जोड़ा जा रहा है; जिससे इस बाधा को दूर किया जा सके। भारत अफगानिस्तान के माध्यम से सेन्ट्रल एशियाइ देशों तक पहूच बना सकेगा। उर्जा के क्षेत्र मे सहयोग की दृष्टि से तापी पηयोंजना ; जिसमे तुर्कमेनिस्तान अफगानिस्तान पाकिस्तान तथा भारत शामिल है; प्रमुख पηयोजना है लेकिन अफगान संकट तथा देशो के मध्य आपसी समन्वय की कमी के कारण यह पηयोजना अभी लटकी हुई है जिसमे अफगानिस्तान की राजनीतिक अस्थिηता प्रमुख है।

3- चीन—पाकिस्तान का प्रभाव— भारत दक्षिण एशिया का एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय शक्ति देश है तथा वैश्विक शक्ति बनने के लिए प्रयत्नशील है। भारत के घरेलू राजनीति मे बढ़ती संप्रदायवाद अस्थिर पड़ोसी तथा महत्वाकांक्षी चीन भारत के वैश्विक शक्ति बनने के मार्ग मे सबसे बड़ी बाधा है। पाकिस्तान भारत को हमेशा एक शत्रु देश की तरह देखताा है तथा अफगानिस्तान मे भारत की मौजूदगी को वह अपने राजनीति में स्थिηता के लिए खतरा मानता है। पाकिस्तान भारत पर ब्लूचिस्तान विद्रोहियों के समर्थन करने का आरोप लगाता है। इसलिए पाकिस्तान अफगानिस्तान मे भारत के प्रभाव को कम करने का हर सम्भव प्रयास करता है। अफगान लोकतांत्रिक

सरकार

द्वारा पाकिस्तान की चिंताओ को दरकिनार कर भारत के साथ सम्बधों को प्राथमिकता देने के कारण ही पाकिस्तान अफगानिस्तान मे अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए तालिबान का समर्थन करता रहा है। अफगानिस्तान में अमेηकी हमले के बाद से तालिबान क्वेटा; जो पाकिस्तान के ब्लूचिस्तान प्रान्त में पड़ता है से अपने गतिविधियों को संचालित कर रहा था। अतः अफगानिस्तान मे भारतीय प्रभाव के मार्ग मे पाकिस्तान तालिबान का गठजोड़ मुख्य चुनौती है।

चीन एशिया का एक प्रमुख शक्ति तथा महत्वाकांक्षी देश है तथा पाकिस्तान से उसकी नजदीकिया सर्वविदित है। चीन द्वारा 2013 मे ''बेल्ट एंड रोड इनीशिएटिव'' पηयोंजना को लान्च करने के बाद से पाकिस्तान के साथ साथ अफगानिस्तान का महत्व भी उसके लिए बढ़ गया है। बेल्ट एंड रोड पηयोंजना पुराने समय के व्यापाηक मार्ग सिल्क रोड का नया विकल्प है। इस पηयोजना के माध्यम से चीन एशिया अफ्रीका तथा युरोप के देशों को समुंद्र रेल तथा सड़क मार्ग द्वारा आपस मे जोड़ना चाहता है। चीन द्वारा सीपेक पηयोंजना लान्च करने के बाद से वह इसमे अफगानिस्तान को शामिल करना चाहता है। इसमे सबसे बड़ी बाधा अफगानिस्तान में अमेηकी उपस्थिति था। अब जब अफगानिस्तान से अमेηका जा चुका है तथा अफगानिस्तान पर तालिबान का सत्ता पुनः आ गया है तो चीन इसको अपने पηयोंजना मे शामिल करने की कोशिस करेगा। तालिबान को भी घरेलू चुनौतियों का सामना करने लिए बाहरी निवेश की आवश्यकता हागी। अतः वह भी इस पηयोंजना शामिल हो सकता है।

4- आर्थिक कारक– मौजूदा वैश्विक राजनीति मे प्रमुख भूमिका निभाने के लिए किसी भी देश के लिए एक मजबूत अर्थव्यवस्था आवश्यक है। भारत जीडीपी के अनुसार विश्व की पाचवी बड़ी अर्थव्यवस्था है तथा तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के लिए प्रयत्नशील है। अतः भारत के लिए आवश्यक है कि वह अन्य देशों के साथ अपने व्यापाηक सम्बधों का विस्तार करे तथा निर्यात पर ध्यान अधिक केन्द्रित करे। अफगानिस्तान भारतीय बाजारो का सुलभ पहुच चाहता है जिससे वह अपने वस्तुओं का भारतीय बाजारो तक पहुच सुनिश्चित कर सके। वितीय वर्ष 2019–20 में दोनो देशो का व्यापार 1.5 बिलियन अमेηकी डालर को पार कर गया। भारत तथा अफगानिस्तान अपने व्यापाηक सम्बधों को और गति देने के लिए मार्च 2003 मे तरजीही व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए जिसके तहत दोनो देश एक दूसरे के उत्पादो को सीमा शुल्क में झूट प्रदान किए। नवम्बर 2011 मे शार्क शिखर सम्मेलन मे भारत ने सभी उत्पादों पर से बुनियादी सीमा शुल्क हटा दिया जिससे अफगानिस्तान के सभी उत्पाद शराब और तम्बाकू को छोड़कर; को भारतीय बाजार मे बिना शुल्क के पहुच मिल गई।

''दोनो देशों ने अपने सीमायी बाधाओं को दूर करने के लिए तथा दोनो देशो के बीच पहुच सुनिश्चित करने के लिए 2017 मे दोनो देशो को आपस मे जोड़ने वाला एक 'एयर फ्रंट काηडोर' स्थापित करने का निर्णय लिया।''[8] दोनो देशों के बीच व्यापार और निवेश को बढ़ाने के लिए पैसेज टू प्रोस्पेηटी का आयोजन किया जा रहा है। अतः दोनो देश आपसी व्यापार को बढ़ाने की कोशिस कर रहे है जिसका दोनो देशो के व्यापार पर सकारात्मक प्रभाव भी दिख रहा है। अगस्त 2021; जब से तालिबान पुनः अफगानिस्तान की सत्ता पर कब्जा किया है दोनो देशो के बीच सारी गतिविधिया रुक सी गई। लेकिन भारत ने मानवीय सहायता जारी रखे हुए है इसके साथ भारत ने जून 2022 से एक टेक्निकल टीम अफगानिस्तान मे भेजा हुआ है जिससे

भारत जो मानवीय सहायता कार्यक्रम चला रहा है उसकी निगरानी रखी जा सके।

निष्कर्ष . अफगानिस्तान की भौगोलिक स्थिति उसे इस क्षेत्र का एक महत्व पूर्ण देश बना देता है। सम्भवतः हर महाशक्ति ने अफगानिस्तान को अपने नियंत्रण मे रखने के लिए प्रयास किए लेकिन वे दीर्घ समय के लिए सफल नही हो पाएं तथा अफगानिस्तान अपनी स्थिति
''सम्राज्यों का कब्रिस्तान'' को बनाए हुए है।भारत के लिए अफगानिस्तान का महत्व र्निविवाद रुप से है क्योंकि अफगानिस्तान सेन्ट्रल एशिया तथा दक्षिण एशिया के मध्य एक पुल के रुप मे कार्य करत है। अफगानिस्तान भारत को सेन्ट्रल एशिया तक पहुच प्रदान करता है। 9/11 के आतंकवादी घटना के अमेηकी प्रतिक्रिया के बाद भारत और अफगानिस्तान सम्बधों जो दौर शुरु हुआ वह तालिबान के पुनः अफगानिस्तान की सत्ता में आने से रुक सा गया। तालिबान की पाकिस्तान से नजदीकिया ही भारत के लिए अफगानिस्तान मे प्रमुख बाधा है। पाकिस्तान और अफगानिस्तान के मध्य हाल में हुई घटनाओं का विश्लेषण करे तो दोनों देशो के मध्य सम्बध सामान्य नही दिख रहे है। हाल के दिनो मे तहरीके तालिबान पाकिस्तान तथा शरणार्थीयों को लेकर दोनो के मध्य सम्बधों मे संघर्ष भी देखने को मिला है। वर्तमान तालिबान का अफगानिस्तान पर मजबूत पकड़ है; हालांकि इस्लामिक स्टेट–खुरासान भी अफगानिस्तान में अपने प्रभाव को बढ़ाने का प्रयास कर रहा है। भारत भी अफगानिस्तान की स्थितियों पर नजर बनाए हुए है तालिबान द्वारा भारत को आश्वासन दिया गया है कि वह अफगानिस्तान की धरती को किसी भी देश के विरुद्ध उपयोग करने की अनुमति नही देगा।

अब यह देखना रुचिकर होगा कि अफगानिस्तान मे तालिबान शासन को लेकर वैश्विक देश क्या रुख अपनाते है अभी तक केवल रुस ने ही तालिबान शासित अफगानिस्तान मान्यता दिया है।[9] चीन; रुस; इरान आदि देश तालिबान शासन से सम्बधों को बढ़ा रहे है। अब यह देखना होगा कि भारत बदलते वैश्विक पηदृश्य में तालिबान शासन को लेके क्या नीति अपनाता है हालांकि भारत भी अफगानिस्तान में अपनी उपस्थिति को बनाए हुए है।

सन्दर्भ सुची– Books, Research Papers and Websites

1. Paliwal, A. (2017). My Enemy's Enemy. Noida, HarperCollins Publisher India. Pg-12

2. Bansal, A. (2022). Afghanistan The New Great Game. New Delhi Pentagon Press LLP.pg.-20
3.ebid

4. Paliwal, A. (2017). My Enemy's Enemy. Noida. HarperCollins Publishers India.pg.-24

5. https://peacemaker.un.org/documents/agreement-provisional-arrangements-afghanistan-pending-re-establishment-permanent

6. Ananth Krishnan, S. J. (2022). *The Comrades And The Mullahs: China, Afghanistan And The New Asian Geopolitics.* Haryana: HarperCollins Publisher.pg.-29

7. R K Sawhney, A. S. (2019). *Afghanistan: A Role For India.* New Delhi: KW Publishers Pvt Ltd.pg.-48

8. R K Sawhney, A S (2019). Afghanistan: A Role For India. New Delhi, KW Publishers Pvt Ltd. Pg.-205

9. https://www.bhaskar.com/international/news/russia-officially-recognizes-taliban-afghanistan-first-country-135369734.html

https://www.cfr.org/backgrounder/chinas-massive-belt-and-road-

initiative

Junaid, A. (2021). Indo-Afghan Relations: A Historical Analysis. Pak Journal of Int'L Affairs

Ali, W. (2019). Historical Perspective of Indo-Afghan relations. International Journal of Political science and Governance

https://idronline.org/article/social-justice/afghanistan-and-india-what-you-need-to-know/?gad_source=1&gclid=Cj0KCQjwm7q-BhDRARIsACD6-fUdZ4naKYQQUkQaeg7JcBRmMy2TWpy5mRYleOG3_9Bh_WCvXUZ8ZXIaAuQfEALw_wcB

Badloon, B., Hashami, S.A. (2019). Afghanistan's political and economic importance for India. International Journal of Multidiscplinary Research and Development

Kamal, M. (2019). Indian Strategic Influence in Afghanistan: Realist ends through Social means

Nath, J. (2019). Significance of Afghanistan in Indian foreign policy. Humanities & Social Sciences Review

shttps://www.thehindu.com/news/national/india-to-make-a-bold-move-on-afghanistan/article69584396.ece

https://www.isas.nus.edu.sg/papers/indias-evolving-relationship-with-afghanistan/

https://www.bbc.com/news/articles/cp8ke9e27dxo